Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 24 अंक 3 30 मार्च, 2024 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

राजनैतिक क्रांति व जन चेतना के सूत्राधार-ताऊ देवीलाल

06 अप्रैल पुण्य तिथि पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जन नायक ताऊ देवीलाल पूरे राष्ट्र में विशेष तौर से उत्तरी भारत में राजनैतिक क्रांति व जन चेतना जागृत करने के एक मात्र सुत्राधार बनकर उभरे। उनका सफरनामा अल्पायु से ही ताउम्र संघर्ष व चुनौती पूर्ण मार्ग से होकर गुजरा है। मात्र 16 वर्ष की आयु में ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी शिक्षा बीच में छोडकर भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े और संघर्ष करते हुए अपने एकमात्र सार्वजनिक हित के लक्ष्य को साधने के लिए उन्होने अपनी परंपरागत हजारों एकड़ कृषि भूमि, भूमिहीन कामगारों व खेतीहर मजदूरों के सुपुर्द कर दी। समाज को राजनैतिक तौर से जागरूक करने व राजनैतिक चेतना को मजबूत करने के लिए सामाजिक तकनीकीकरण और वर्गीकरण के दो अद्भुत सामाजिक संसाधनों पर अमल करते हुए जनता के सामुहिक सहयोग से न्याय युद्ध, यातायात अवरूद्ध करने, पैदल यात्रा आदि के शांतिपूर्ण संघर्ष से प्रशासन व सरकार को जन कल्याण के प्रति जागरूक किया। चौधरी देवीलाल का लंबा राजनैतिक दौर सदैव जन कल्याण व राजनैतिक जनक्रांति के संघर्ष से परिपूर्ण रहा है और सत्ता में रहते हुए व सत्ता से बाहर भी जनता जनार्धन के सहयोग अपने इन अनुकरणीय उद्देश्यों के प्रति संघर्ष करते रहे।

संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों से हरियाणा राज्य के अस्तित्व को लेकर मतभेद होने पर उनके कट्टर विरोधी बन गए व कांग्रेस से 39 साल के राजनैतिक संघर्ष के बाद पार्टी को अलविदा कर दिया और जनता जनार्धन के बीच सामाजिक जन चेतना व राजनैतिक क्रांति लाने के लिए निकल पड़े। हरियाणा वासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवाई की और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा, जिस कारण 1 नवंबर 1966 को हरियाणा प्रांत को अलग से राज्य का दर्जा दिया गया और वर्ष 1974 में रोड़ी (सिरसा) से विधायक चुने गए। वर्ष 1975 में प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी द्वारा प्रजातांत्रिक मुल्यों व जनता के राजनैनिक अधिकारों की अनदेखी कर तानाशाही रवैये के विरूद्ध राष्ट्र के कोने–कोने में जाकर सरकार की जन विरोधी नीतियों का भंडाफोड़ करके जनता में राजनैतिक जनक्रांति लाने के लिए पुरजोर संघर्ष किया और 19 मास तक गुडगांवा जेल में रहे, लेकिन अपना संघर्ष जारी रखा। उनका मानना था कि राजनैतिक अधिकार संघर्ष से मिलते हैं, मांगने से नहीं। अपने राजनैतिक दौर में हमेशा गुरू गोविंद सिंह की प्रेरणादायक वाणी "कोऊ किसी को राज ना देह है, जो लेह निज बल से लेह है" पर अमल करते हुए राजनैतिक चेतना व कल्याणकारी सोच की राजनीति के लिए संघर्ष करते रहे।

जन साधारण के सहयोग व संघर्ष से राजनैतिक क्रांति लाकर वर्ष 1977 में जनता पार्टी के हरियाणा में एकमात्र नेता उभरकर आगे आए और शेरे हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध हुए व मुख्यमंत्री बने। विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटों पर विजय प्राप्त की जिनमें से 17 आरक्षित सीटों पर विभिन्न वर्गों के उम्मीदवारों को विजय दिलवाई और लोकसभा की सभी 10 सीटों पर जीत हासिल की। अपने शासनकाल में जन साधारण के लिए कल्याणकारी नतियों व राजनैतिक जागरूकता को विशेष तौर से जारी रखा और जनहित के लिए अनेकों कल्याणकारी योजनाएं – गरीब, मजदूर, किसान, दुकानदार के दस हजार रूपये तक के कर्जे माफ, किसानों को ओलावृष्टि का मुआवजा, व्यापारी भाईयों के लिए 59 वस्तुओं पर सेल्सटैक्स कम, इंसपैक्टरी राज से छुटकारा, प्रदेश के वृद्धों को सम्मान पैंशन, गांव–गांव में हरिजन चौपाल, बेरोजगार युवकों को बेरोजगारी भत्ता, किसानो को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य, सडक के किनारे खड़े वृक्षों में किसानों को आधा हिस्सा, ट्रैक्टर का टोकन टैक्स, साईकिल टैक्स, रेडियो पर लाईसैंस पूरी तौर पर समाप्त, गांव–गांव में रिंग बांध बनाकर बाढ पर नियंत्रण, 24 घंटे बिजली, पानी का प्रबंध, किसानों को 6.5 एकड़ भूमि का मालिया

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

माफ, इंटरव्यु पर जाने वाले बेरोजगार युवकों को मुफ्त बस यात्रा, हरिजन के घर पर पहला बच्चा पैदा होने पर 300 रूपये, दूसरा बच्चा होने पर 500 रूपये की ग्रांट राशि, हरिजन विधवा की लडकी की शादी के लिए सरकार द्वारा 5100 रूपये की कन्यादान सहायता राशि, खानाबदोश व घुमंतु लोगों के बच्चों द्वारा स्कूल जाने पर प्रतिदिन एक रूपया की व्यवस्था, गावों तथा शहरों में शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था, मार्केटिंग बोर्ड द्वारा गांव–गांव में सडकों का निर्माण, सरकारी रोजगार प्राप्त करने हेतू उम्मीदवारों की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष से बढ़ाकर 35 वर्ष करना, काम के बदले अनाज की योजना, गांव व शहर के विकास के लिए अद्भुत मैचिंग ग्रांट योजना, पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए नंबरदारी का पद सुरक्षित करना, नई कृषि नीति की घोषणा, खुले जनता दरबार, बड़े–बड़े पांच सितारा होटलों में चौपाल की व्यवस्था आदि शुरू की जिनका आज समस्त राष्ट्र में अनुकरण किया जा रहा है, जो कि उनका ऐतिहासिक कल्याणकारी व जनक्रांति की सोच का परिणाम है।

अपनी दूरदर्शी जन क्रांतिकारी राजनैतिक छवि की बदौलत वर्ष 1986 व 1987 में हरियाणा विधानसभा के निर्विरोध नेता रहे। वर्ष 1986 में कांग्रेंस की भ्रष्ट व खरीद फरोख्त की राजनीति की वजह से मुख्यमंत्री का पद छीन लिया गया लेकिन 1987 के चुनाव में भ्रष्ट राजनीतिज्ञों को करारा जबाब देकर विधानसभा की 85 सीटें जीतकर एक एतिहासिक मिशाल कायम करते हुए कांग्रेंस का सफाया किया और मुख्यमंत्री बने। ग्रामीण क्षेत्र के विकास के मुख्य स्त्रोत हरियाणा खादी बोर्ड की प्रदेश में प्रथम बार स्थापना की क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह उनकी विशेष सोच थी कि ग्राम विकास के बिना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। किसान, कामगार, काश्तकार व छोटे व्यवसायी वर्ग के कल्याण व उत्थान के लिए कर्जा माफी, आसान किस्तों पर ऋण उपलब्ध करवाने, खेती के लिए सस्ते दामों पर खाद, बीज उपलब्ध करवाने, बिजली–पानी की प्रयाप्त व्यवस्था आदि करवाकर राष्ट में एक नई जन कल्याणी व्यवस्था शुरू की। उनकी एक विशेष कल्याणकारी सोच थी कि राष्ट्र के विकास व कल्याणकारी जनक्रांतिकारी राजनैतिक व्यवस्था के लिए किसान का बेटा प्रधानमंत्री व दलित का बेटा राष्ट्रपति होना आवश्यक है। वर्ष 1987 में राजस्थाान के सीकर व हरियाणा में रोहतक से एक साथ सांसद चुने गए और देश के उप प्रधानमंत्री रहे। वर्ष 1989 में उन्होने सैंट्रल मोटर व्हीकल अधिनियम 1989 के नियम 7 के तहत प्रावधान करवाकर किसान के ट्रैक्टर गैर को ट्रांसपोर्ट व्हीकल की श्रेणी में रखवाकर हर प्रकार के कर से मुत करवाया लेकिन वर्तमान केंद्रीय सरकार इस अधिनियम में संशोधन करके किसान के कृषि ट्रैक्टर को ट्रांसपोर्ट व्हीकल यानि कि कामर्शियल व्हीकल की श्रेणी में लाना चाहती है जबकि चौधरी देवीलाल का मानना था कि किसान का ट्रैक्टर कृषि कार्य के लिए उनका गड्डा है, और टैक्स मुक्त किया। राष्ट्र में नई राजनैतिक जनक्रांति लाने व जन साधारण के कल्याण हेतू कल्याणकारी व निष्पक्ष सत्ता स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री पद की पेशकश को ठुकराकर स्वर्गीय श्री वी.पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्र शेखर तत्पश्चात् देवगाड़ा को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर कहलाए। उनका ये मानना था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं अपितु जन कल्याण को समर्पित होनी चाहिए।

जनकल्याण व निष्पक्ष राजनैतिक व्यवस्था की। उन्होने ग्रामीण पृष्ठभूमि के हर वर्ग के व्यक्ति को राजनीति में प्रवेश करवाकर सभी वर्गों को एक मंच पर लाकर क्रांतिकारी राजनीति का श्री गणेश किया और उपेक्षित हो रहे किसान, कामगार, काश्तकार वर्ग को अपने हितों की पैरवाई करने के लिए राजनीति में उभरकर आने को प्रेरित किया। हरियाणा में गुहला से श्री जोगीराम, नारायणगढ से लाल सिंह गुर्जर, दलित वर्ग से बड़ौदा से डा० कृपाराम पुनिया, जुंडला से रिसाल सिंह, कलायत से श्री बनारसी दास, बवानी खेड़ा से श्री जगन्नाथ, रतिया से श्री आत्मा राम गिल, गुजरात से चिमन भाई पटेल, उत्तरप्रदेश से श्री मुलायम सिंह यादव, रामनरेश यादव, बिहार से श्री कर्पूरी ठाकुर, लालु प्रसाद यादव, आंध्रप्रदेश से श्री एन.टी. रामाराव, कर्नाटक से श्री देवगौड़ा, पंजाब से सरदार प्रकाश सिंह बादल आदि को राजनीति में सक्रिय सहयोग दिया और समस्त राष्ट्र में क्रांतिकारी राजनति की नींव रखी। उन्होने कभी भी जातिवाद, छल कपट व भेदभाव की राजनीति नहीं की। हरियाणा के इतिहास में पहली बार सैनी वर्ग के श्री मनोहर लाल को महेंद्रगढ़ से सांसद बनवाया। बाद में 1980 में कुरूक्षेत्र से उनको सांसद विजयी करवाया। श्री गुरदयाल सिंह सैनी, श्रीमति कलाशो देवी जब तक चौधरी देवीलाल के साथ रहे, कुरूक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से सैनी बिरादरी का प्रतिनिधित्व कायम रहा। हालांकि इस क्षेत्र के लगभग 1 लाख मतदाताओं

में 4 लाख से अधिक वोटर जाट समाज से थे। इसी प्रकार करनाल लोकसभा क्षेत्र से कश्यप जाति से संबंधित उमेद सिंह को पहली बार सांसद प्रत्याशी बनाया। बाद में इंद्री हल्के से डा० अशोक कश्यप को विधायक बनवाया। उनकी स्पष्ट वादिता व निष्पक्षता का उनके विरोधी भी लोहा मानते थे। वे कहते थे कि मुझे जब भी नीचा दिखाने की कोशिश की गई, मैं अपनी असली ताकत जो भारत के ग्रामीण लोगों में निहित है, के सहयोग से अधिक ताकतवर होकर उभरा हूं। वर्ष 1979 में जब उनको मुख्यमंत्री पद को पाने में अपदस्थ किया गया तो उन्होने कहा कि एक सरमायेदार ने किसान की झोपड़ी फूंकी थी, मैनें उनके महल को आग लगा दी और श्री मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री के पद से हटाने की अह्म भूमिका निभाई। उनकी यह अह्म क्रांतिकारी सोच थी – "लोकराज लोकलाज से चलता है"।

लेखक के नीजि अनुभव हैं कि वर्ष 1978 में लेखक को हरियाणा सरकार में सहायक पुलिस महानिदेशक के तौर पर चौधरी देवीलाल के मुख्यमंत्री काल में उनके नीजि सम्पर्क में रहने का अवसर मिला। इसी वर्ष पूर्व लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद हुए लोकसभा उप चुनाव में करनाल लोकसभा क्षेत्र से जनता पार्टी के उम्मीदवार श्री महेंद्र सिंह लाठर व कांग्रेस के श्री चिरंजीलाल शर्मा के चुनाव अभियान के समय पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी एक मुकदमें में जेल हिरासत से रिहा हुई और चुनाव अभियान में कूद पड़ी। उनका पहला दौरा करनाल लोकसभा क्षेत्र का था और उनकी पहली जनसभा पानीपत में हुई। पूरा राष्ट्र विशेषकर हरियाणा, पंजाब उनके प्रति प्रथम राजनैतिक रूझान देखने व जानने का इच्छुक था। ताऊ देवीलाल ने बतौर मुख्यमंत्री लेखक को निर्देश दिया कि पानीपत में होने वाली श्रीमति इंदिरा गांधी की जनसभा की पूरी जानकारी मेरे को व लाला जगतनारायण को पानीपत विश्राम गृह में तुरंत दी जाये। मैने जन सभा की रिकार्डिंग करवाई व रैस्ट हाउस पहुंचा, जहां पर दोनों उपस्थित थे और कहा "ये सुनाओं लोगों का क्या रूझान था। मैने टेप रिकार्ड आन किया और आन होते ही तालियों की गडगड़ाहट व जन समूह का नारा –"इंदिरा गांधी आगे बढ़ो, हम तुम्हारे साथ हैं" सुनते ही कहा लाला जी इंदिरा खत्म नहीं हुई अभी भी लीडर है, जिससे स्पष्ट है कि वे राय देने में भी पूर्णतया स्पष्ट व निर्भिक थे। इसी प्रकार मुझे उनके साथ का एक और अवसर याद है जो कि उनकी जन कल्याणकारी, क्रांतिकारी भाावना के साथ–साथ जनहित में तुरंत निष्पक्ष व बेझिझक कार्यवाही को दर्शाता है। वर्ष 1978 के दौरान ही जब उत्तरी हरियाणा में गन्ने की बंपर पैदावार हुई थी और केंद्र सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण गन्ना 4 रूपये क्विंटल तक कौडियों के भाव बिक रहा था और गन्ने की धीमी अदायगी व उगाही के कारण किसानों में घोर निराशा थी। यमुनानगर से किसानों का एक शिष्टमंडल मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल को मिला व अपनी समस्या बताई कि गन्ना खेतों में खराब हो रहा है और शुगर मिल बंद हो चुका है। उन्होने तुरंत सरस्वती गन्ना मिल यमुनानगर के स्वामी श्री डी. डी. पुरी को फोन कर कहा कि जब तक किसान के खेत में गन्ने की एक भी टोटी (टुकड़ा) शेष है, आप शुगर मिल बंद नहीं करोगें। यह उनकी किसान, काश्तकार के हित के प्रति चिंता को व्यक्त करता है जबकि इससे पूर्व की चौधरी भजनलाल सरकार द्वारा गन्ना उगाही व मात्र कुछ रेट बढ़ाने के मुद्दे पर किसानों पर लाठीचार्ज व अपराधिक मुकद्दमें दर्ज किए गए थे। जब चौधरी देवीलाल को यह आभास हुआ कि किसान, कामगार बढ़ी कृषि लागत व प्रकृति की मार से घाटे में जा रहा है तो तुरंत किसान, कामगार व छोटे दुकानदारों के कर्ज माफ करने की एक ऐतिहासिक पहल की, जो कि एक क्रांतिकारी मुख्यमंत्री ही कर सकता है और बाद में इस योजना का किसान हित में समस्त राष्ट्र में अनुशरण किया गया।

निंसदेह यह बहुत गर्व एवं सम्मान की बात है कि चौधरी देवीलाल एक ऐसी अकाल्पनिक एवं अद्भुत प्रतिभा के स्वामी थे जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन जनता जनार्धन के मूल अधिकारों के हित की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया तथा सदैव ही उनके पथ को उजागर किया और मार्गदर्शन के लिए संघर्षशील रहते थे। ऐसा करते–करते 6 अप्रैल 2001 को संघर्षशील धरतीपुत्र चौधरी देवीलाल की आत्मा पवित्र धरती में विलीन हो गई और आज आम आदमी लगातार टिकटकी लगाए अपनी गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए किसी और धरतीपुत्र के पुनः उद्गम होने की मृगतृष्णा में है। लेखक के विचारानुसार जननायक ताऊ देवीलाल को "भारत रत्न" से सुशोभित कर किसानों, कामगारो और काश्तकारो के सम्मान को बढ़ाना चाहियें।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

देश की शान शहीदे आजम भगत सिंह

(27 सितम्बर 1907– 23 मार्च 1931)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

भगत सिंह भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। पहले लाहौर में बर्नी सैंडर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम–विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया।

भगत सिंह का जन्म तत्कालीन अनेक साक्ष्यों के अनुसार 27 सितंबर 1907 ई० को गांव बंगा (पंजाब) में एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक किसान/जाट परिवार से थे। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।

उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गए। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गान्धी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने लगे। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण उनमें थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ, पर पूरे राष्ट्र की तरह वो भी महात्मा गाँधी का सम्मान करते थे। पर उन्होंने गाँधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन की जगह देश की स्वतन्त्रता के लिए हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे।

वर्ष 1922 में चौरा–चौरी हत्याकांड के बाद गाँधी जी ने जब किसानों का साथ नहीं दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका अहिंसा से विश्वास उठ गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र रास्ता है। उसके बाद वह चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर पार्टी में शामिल हो गए। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 04 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे० पी० सांडर्स को मारा था। इस कार्रवाई में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरतारी भी दी।

1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को मारने की योजना सोची। सोची गई योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर

ऐसे बैठ गए जैसे कि वो खराब हो गई हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गए। उधर चन्द्रशेखर आजाद पास के डी०ए०वी० स्कूल की चारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे।

17 दिसंबर 1928 को करीब सवा चार बजे, ए०एस०पी० सॉण्डर्स के आते ही भगत सिंह तथा राजगुरू ने 5 गोलियां सीधी उसके सर में मारी जिससे वह वही पर मर गया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आजाद ने उसे सावधान किया –'आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।' नहीं मानने पर आजाद ने उसे गोली मार दी और वो वहीं पर मर गया। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया।

भगत सिंह यद्यपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे परन्तु वे वामपंथी विचारधारा को मानते थे, तथा कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों से उनका ताल्लुक था और उन्हीं विचारधारा को वे आगे बढ़ा रहे थे। यद्यपि, वे समाजवाद के पक्के सहपोशी भी थे। मजदूर विरोधी ऐसी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। सभी चाहते थे कि अँग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में ऐसी नीतियों के प्रति आक्रोश था। ऐसा करने के लिये ही उन्होंने दिल्ली की केन्द्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई थी।

भगत सिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अँग्रेजों तक उनकी 'आवाज' भी पहुँचे। हालाँकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद न था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। पूरा हाल धुएँ से भर गया। भगत सिंह चाहते तो भाग भी सकते थे पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहें वह फाँसी ही क्यों न हो। अतः उन्होंने भागने से मना कर दिया। बम फटने के बाद उन्होंने 'इंकलाब–जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद–मुर्दाबाद!' के नारे लगाये और अपने साथ लाये हुए पर्चे असेम्बल में फैंक दिए। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गई और दोनों को गिरतार कर लिया गया।

जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहते थे। जेल में रहते हुए भी उनका अध्ययन लगातार जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहें एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था मैं नास्तिक क्यों हू जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हडताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

26 अगस्त, 1930 को अदालत ने भगत सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 और 6एफ तथा आईपीसी की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध किया। 7 अक्तूबर, 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनाए जाने के साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बाद भगत सिंह की फाँसी की माफी के लिए प्रिवी परिषद में अपील दायर की गई परन्तु यह अपील 10 जनवरी, 1931 को रद्द कर दी गई। इसके बाद तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय ने वायसराय के सामने सजा माफी के लिए 14 फरवरी, 1931 को अपील दायर की कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए मानवता के आधार पर फांसी की सजा माफ कर दें। भगत सिंह की फाँसी की सजा माफ करवाने हेतु महात्मा गाँधी ने 17 फरवरी 1931 को वायसराय से बात की फिर 18 फरवरी, 1931 को आम जनता की ओर से भी वायसराय के सामने विभिन्न तर्को के साथ सजा माफी के लिए अपील दायर की। यह सब कुछ भगत सिंह की इच्छा के खिलाफ हो रहा था क्यों कि भगत सिंह नहीं चाहते थे कि उनकी सजा माफ की जाए।

23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और जब उनसे उनकी आखरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि वह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और उन्हें वह पूरी करने का समय दिया जाए। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था–'ठहरिए! पहले एक

क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।' फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले –'ठीक है अब चलो।'

फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे –

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे।
मेरा रँग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला।।

भगत सिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उद्विग्न हो जायेगी और ऐसा उनके जिन्दा रहने से शायद ही हो पाये। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था। फाँसी के पहले ३ मार्च को अपने भाई कुलतार को भेजे एक पत्र में भगत सिंह ने लिखा था।

उन्हें यह फिक्र है हरदम, नयी तर्ज–ए–जफा क्या है?
हमें यह शौक है देखें, सितम की इन्तहा क्या है?
दहर से क्यों खफा रहें, चर्ख का क्या गिला करें।
सारा जहाँ अदू सही, आओ! मुकाबला करें।।

इन जोशीली पंक्तियों से उनके शौर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। चन्द्रशेखर आजाद से पहली मुलाकात के समय जलती हुई मोमबती पर हाथ रखकर उन्होंने कसम खायी थी कि उनकी जिन्दगी देश पर ही कुर्बान होगी और उन्होंने अपनी वह कसम पूरी कर दिखायी।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं, एक हुकूमत, जिसका दुनिया के इतने बड़े हिस्से पर शासन था, इसके बार में कहा जाता था कि उनके शासन में सूर्य कभी अस्त नहीं होता। इतनी ताकतवर हुकूमत, एक 23 साल के युवक से भयभीत हो गई थी।

ऐसे महान क्रान्तिकारी, देश भक्त, आजादी के मतवाले तथा देश की शान शहीदे आज़म को हम सभी का शत्–शत् नमन।

चौधरी लहरी सिंह मलिक

(3 मार्च 1901 से 3 अक्टूबर 1981)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

चौधरी लहरी सिंह मलिक रोहतक निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व सांसद (तीसरी लोकसभा 1962–67) थे। हालांकि एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और सर छोटू राम के सहयोगी, पेशे से वह स्वतंत्रता–पूर्व युग में एकवकील थे। वह 1946–61 तक पंजाब विधान सभा के सदस्य भी रहे। वह 1946–1955 तक पंजाब सरकार में मंत्री भी रहे। चौधरी लहरी सिह हरियाणा के सोनीपत जिले की गन्नौर तहसील में स्थित भिगाण गांव के रहने वाले थे उनका जन्म 3 मार्च 1901 में रोहतक जिले की सोनीपत तहसील के गांव भिगाण में एक साधारण किसान/जाट परिवार चौ0 रामनारायण के घर हुआ था। आपने सोनीपत से मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त की तथा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से एफ.ए. पास करके रामजस कॉलेज, दिल्ली से बी.ए. की शिक्षा प्राप्त की और लाहौर, पंजाब यूनिवर्सिटी से एल एल. बी. की शिक्षा प्राप्त की तथा 1928 में सोनीपत बाद में रोहतक में वकालत शुरू कर दी और वकालत के साथ–साथ राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया। सन् 1935 में आप जिला बोर्ड रोहतक के सदस्य चुने गए। दिसम्बर, 1939 से मार्च, 1940 तक ग्राम आसौदा जिला रोहतक में कांग्रेस का प्रचार न होने देने के कारण 3 माह तक सत्याग्रह चला जिसमें चौ० लहरी सिंह ने पूरा भाग लिया और कई कांफ्रेंसों में भाषण दिये। 10 जनवरी, 1940 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के डेलीगेट चुने गए। सितम्बर, 1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया इसलिए आपने जिता बोर्ड की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया और सत्याग्रह के कार्य में सक्रिय हो गए और घरेलू हालात के कारण आप जेल न जा सके। लेकिन आपके बड़े भाई चौ चरण सिंह तीन बार सत्याग्रह करके जेल गए। इन्ही दिनों सोनीपत में आपका हरियाणा नेशनल हाई स्कूल चल रहा था जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। फरवरी, 1946 में आप पंजाब विधानसभा के पहली बार सदस्य बने और कांग्रेस व जमींदारा लींग की गठबन्धन सरकार में मंत्री बनाये गये। चौ० लहरी सिंह सर छोटूराम के सहयोगी भी थे। मन्त्री रहते हुए उन्होंने कई प्रशासनिक कार्य बुहत अच्छे किये।

गन्नौर विधानसभा क्षेत्र ने प्रदेश की राजनीति को कई दिग्गज राजनेता दिए है। जिन्होंने संयुक्त पंजाब और फिर 1966 में हरियाणा के गठन के बाद तक प्रदेश की राजनीति को प्रभावित किया है। यहां के प्रतिनिधि क्षेत्र के मुद्दे दबंगई से उठाने व अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए जाने जाते रहे हैं। विस सीट पर शुरू से ही स्व. लहरी सिंह व उनके परिवार का वर्चस्व रहा है। चुनाव परिणाम इस परिवार के द्वारा ही प्रभावित किए जाते रहे है। इस सीट पर पूर्व शिक्षा मंत्री स्व. शांति राठी ने भी अपनी कार्यशैली के बलबुते पर प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई है। जाट बाहुल्य इस सीट पर दो बार ब्राह्मण प्रत्याशियों ने भी जीत दर्ज की है।

आजादी के बाद वर्ष 1951 के चुनाव में लहरी सिंह ने जमीदार पार्टी के प्रत्याशी चंद्रभान छिक्कारा तथा 1957 में निर्दलीय चिरंजीलाल को हराने में कामयाबी हासिल की थी। संयुक्त पंजाब में उन्हें मौजूदा हरियाणा के हितों की लड़ाई लड़ने के लिए जाना जाता रहा। लेकिन 1962 में हुए चुनाव में कांग्रेस ने जमींदार पार्टी छोड़कर आए चंद्रभान छिक्कारा को मैदान में उतारा, लेकिन लोगों की नाराजगी के चलते वह निर्दलीय पं. चिरंजीलाल शर्मा से चुनाव हार गए। वर्ष 1967 में कांग्रेस ने लहरी सिंह के भतीजे राजेंद्र सिंह को मैदान में उतारा, इस चुनाव में उन्होंने अपने चाचा की हार का बदला लेते हुए निर्दलीय चिरंजीलाल को हराने में कामयाबी हासिल की। वर्ष 1968 के चुनाव में राजेंद्र सिंह विशाल हरियाणा पार्टी के टिकट पर मैदान में उतरे तथा कांग्रेस प्रत्याशी प्रताप सिंह को हराया। लेकिन 1972 में निर्दलीय मैदान में उत्तरे प्रताप सिंह से वह चुनाव हार गए।

आपातकाल के बाद 1977 में हुए चुनाव में जनता पार्टी ने शांति राठी को मैदान में उतारा। उनके सामने विशाल हरियाणा पार्टी के टिकट पर राजेंद्र सिंह तथा कांग्रेस के टिकट पर फतेह सिंह मैदान में उत्तरे। जनता पार्टी की लहर में शांति राठी ने जीत दर्ज की। इसके बाद 1982 के चुनाव में कांग्रेस ने जगदीप सिंह चीमा को मैदान में उतारा, लेकिन वह निर्दलीय मैदान में उत्तरे राजेंद्र सिंह से चुनाव हार गए। वर्ष 1987 के चुनाव में लोकदल के टिकट पर वेद सिंह मलिक ने राजेंद्र सिंह को हराया। इसके बाद वर्ष 1991 के चुनाव में कांग्रेस ने फिर से शांति राठी को मैदान में उतारा। इस चुनाव में उन्होंने जनता पार्टी के उम्मीदवार वेद सिंह मलिक को हराने में कामयाबी हासिल की। पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल ने काग्रेस से बगावत कर हरियाणा विकास पार्टी का गठन किया। इसके बाद 1996 में हविपा के टिकट पर रमेश कौशिक ने समता पार्टी के वेद सिंह मलिक को हरा दिया। इसके बाद 2000 के चुनाव में कांग्रेस ने स्व० राजेंद्र सिह के पुत्र जितेंद्र मलिक पर दांव आजमाया। उनके मुकाबले में इनेलो के वेदसिंह मलिक थे। लेकिन उन्होंने पहली बार में ही जीत दर्ज की। वर्ष 2005 में भी जितेंद्र मतिक दुबारा यह सीट कांग्रेस की झोली में डालने में कामयाब रहे। वर्ष 2009 में जितेंद्र मलिक के सांसद चुने जाने के बाद कांग्रेस ने पं० चिरंजीलाल के पुत्र कुलदीप शर्मा को मैदान में उतारा। उन्होंने इस चुनाव में इनेलो के .ष्णगोपाल त्यागी को शिकस्त दी।

चौ० लहरी सिंह जब पंजाब विधान सभा में 1946 में सदस्य बने तब उनको पहली बार मंत्री बनाया गया। उस समय उनके द्वारा किये गये अनेक उल्लेखनिय कार्यों की आज भी लोग सराहना करते है। उनके द्वारा किये गये अनेक कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वह समय ठग डाकू और लूटेरों का था जिनको लोग मखरूर और फरहैरी भी कहते थे। चौ० लहरी सिंह ने सभी मखरूर पार्टीयों का सफाया करने का काम किया था। कुछ तो उनके समझाने से मुख्यधारा में शामिल हो गये और जो मुख्य धारा में शामिल नहीं हुये वो पुलिस की गोलियों का शिकार हुये, जिनमें सबसे प्रसिद्ध मखरूर/डाकू हेमराज दलाल गांव मेहरड़ा, जिला जीन्द हुआ करते थे। वो पुलिस का सामना करते हुये गांव मेरहड़ा में ही पुलिस की गोलियों का शिकार बन गये थे। चौ० लहरी सिंह ने प्यासी भूमि के लिये अनेक डिस्ट्रीब्यूट्री और रजबाहे निकलवायें। जिनसे किसानों की प्यासी भूमि में पानी लगने से किसानों की उपज बढ़ी और किसानों में प्रसन्नता की लहर दौड़ी और अपने समय में किसानों को ज्यादा से ज्यादा पानी नहरों से दिलवाया। ऐसी महान हस्ती को हम बार–बार नमन करते है।

लेटिनेंट जरनल खेम करण सिंह

(5 मार्च, 1921 – 26 जुलाई, 2016)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

लेटिनेंट जनरल खेम करण सिंह, एमवीसी भारतीय सेना में एक जनरल ऑफिसर थे। 1971 के युद्ध के दौरान राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं के लिए उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान उनकी सेवाओं के लिए उन्हें महावीर चक्र भी मिला था। लेटिनेंट जनरल खेम करण सिंह का जन्म हरियाणा के जिला रोहतक के भदानी गांव के एक जाट/किसान परिवार में हुआ था उनके दादा जी श्री राम सिंह सेना में रिसालदार और पिता जी श्री मानद मेजर भगत सिंह भी यानी पूरा परिवार पहले से सेना में रह कर देश की सेवा में योगदान दे रहा था।

खेम करण सिंह को 1941 में 16वीं लाईट कैवेलरी में नियुक्त किया गया था, जिसकी बाद में उन्होंने 16वीं लाईट कैवेलरी की कमान संभाली। 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में सिंह ने 1 बख्तरबंद ब्रिगेड की कमान संभाली और उन्हें उनकी अच्छी सेवाओं के लिए महावीर चक्र से सम्मानित किया गया।

महावीर चक्र, परमवीर चक्र के बाद भारत में दूसरा सबसे बड़ा सैन्य सम्मान है और दुश्मन की उपस्थिति में विशिष्ट वीरता के कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है, चाहे वह किसी भी समय हो। जमीन पर समुन्द्र में या आकाश में। इसने ब्रिटिश विशिष्ट सेवा आदेश का स्थान ले लिया। यह पदक मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है।

एक बख्तरबंद ब्रिगेड के कमांडर ब्रिगेडियर खेम करण सिंह ने 6 से 22 सितंबर 1965 तक सियालकोट सेक्टर में ऑपरेशन के दौरान अपनी ब्रिगेड और कुछ अतिरिक्त बख्तरबंद इकाइयों का नेतृत्व किया। उन्हें दुश्मन के टैंकों का सामना करना था जो संख्या में बहुत ज्यादा थे।

इनकी सुझबुझ से ही लड़ाई के पहले तीन दिनों के दौरान, ब्रिगेडियर सिंह की कमान के तहत बल ने हमारे अपने कुछ टैंकों ने 75 से अधिक दुश्मन टैंकों को नष्ट कर दिया। यह ब्रिगेडियर सिंह की बहादूरी के कारण संभव हुआ, क्योंकि वह अपने कार्य में, अधिकतम दुश्मन के खतरे के बिंदु पर मौजूद थे।

लेटिनेंट जनरल खेम करण सिंहने तीन दिन और रात तक फिलोरा की लड़ाई लड़ी और इस महत्वपूर्ण संचार केंद्र से दुश्मन को बाहर निकाल दिया। इस कार्रवाई से दुश्मन का मनोबल इतना हतोत्साहित हो गया कि वह करीबी लड़ाई से बच गया और हमारी सेना को केवल चरम सीमा पर ही लडाई लड़नी पड़ी।

लेटिनेंट जनरल खेम करण सिंहने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परंपराओं में उत्ष्ट नेतृत्व, उच्च सामरिक क्षमता और कर्तव्य के प्रति महान समर्पण का शाहसकि प्रदर्शन किया था। जिस के कारण ही उनको 1965 में महावीर चक्र से तथा 1971 में राष्ट्रपति द्वारा पदम भूषण से सम्मानित किया गया था।

Brigadier Khem Karan Singh, Ic- 2014 Brigadier Khem Karan Singh (Later on Retd. as Lt. General), Commander 1 Armoured Brigade Maha Vir Chakra. (Ii) Awardees In Punjab And Rajasthan Sectors.

Khem Karan Singh, a generation third Cavalry Officer, affectionately known to all simply as 'KK', was born on March 3, 1919 at Bhadan? village in Rohtak district of then undivided Punjab. KK's grandfather Risaldar Major Ram Singh and father, Honorary Major Bharat Singh, had served together in 14th Murray's Jat Lancers of the British Indian Army After Independence, 14th Murray's Jat Lancers, the first 'All Jat Regiment raised in the British Indian Army, was demobilized and amalgamated with 20 Lancers

The Citation On His Award Which He Received From The President Of India Reads:

"Brigadier Khem Karan Singh, commander of 1 Armoured Brigade, led his brigade and some additional armoured units into action during the operations in the Sialkot sector from September 6 to 22, 1965. He was to cope with enemy tanks which were superior in number and better in technical performance. During the first three days of the battle, the force under the command of Brigadier Khem Karan Singh destroyed over 75 enemy tanks at the cost of a small number of own tanks. This was possible due to Brigadier Singh's personal example, as he, in his own tank, was present

at the point of maximum enemy threat. He fought the battle of Phillora for three days, day and night, throwing out the enemy from his important communication centre. The enemy was so much demoralized because of this action that he avoided close combat and engaged our forces only at extreme range"

Brigadier Khem Karan Singh, MVC, rose to the rank of Lieutenant General and retired from the service in 1975 after a distinguished military career, spanning some three and half decades.

युद्ध के बाद, सिंह को मेजर जनरल के पद पर पदोन्नत किया गया और एक डिवीजन की कमान संभाली और पश्चिमी कमान के चीफ ऑफ स्टाफ के रूप में कार्य किया। इसके बाद उन्होंने सेनाध्यक्ष जनरल सैम मानेकशॉ के अधीन सेना मुख्यालय में सैन्य संचालन निदेशक (डीएमओ) की महत्वपूर्ण नियुक्ति संभाली।6 अक्टूबर 1971 में, युद्ध शुरू होने से ठीक पहले, सिंह को आई कोर की कमान सौंपी गई, जो उस समय भारतीय सेना की एकमात्र स्ट्राइक कोर थी। उनकी सराहनीय सेवा के लिए, सिंह को तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार – पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

नवंबर 1973 में, सिंह को आर्मी कमांडर ग्रेड में पदोन्नत किया गया और 5वें जनरल ऑफिसर कमांडिंग–इन–चीफ (जीओसी–इन–सी) सेंट्रल कमांड के रूप में पदभार संभाला।

मध्य कमान के जीओसी–इन–सी के रूप में दो साल के कार्यकाल के बाद, सिंह 1975 में सेवानिवृत्त हो गए।

ऐसे शुरवीर महान योद्धा एक देशभक्त सेनानी को हम सभी का बार–बार नमनः।

अटका बनिया देय उधार

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारतवर्ष का हिन्दू जनमत मूलतः हिन्दू बहुमत प्रायः मूर्तिपुजक ही है। भले ही वह दावा स्वयं का एकेश्वरवादी आर्यों के उत्तराधिकारी होने का भी क्यों ना करता रहा हो। वैदिक आर्य बेशक निर्गुण के अनन्य उपासक थे परन्तु हमारे विप्रबन्धु तो सगुण साकार अवतारों के उन मानव निर्मित विग्रहों के ही आराधक हैं, जोकि प्रायः पाषाणमय या धातुमय ही रहे हैं। जिन्होंने भक्तों की तो आपातकाल में क्या सुरक्षा की होगी वे तो वास्तव में आत्मरक्षा में भी स्वयं सक्षम सदैव सफल सिद्ध नहीं हुए हैं। परन्तु परजीवी एवं उदरंभरि हमारे बाघम्बरी आर्यप्ररोहिता ने उन्हीं के सहारे से सदियों तक अपनी अजस्र और अबाध एवं अनवरत उदरपूर्ति अवश्यमेव की है।

कहा तो यही जाता है कि ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण किया है परन्तु यहाँ पर उल्टा मनुष्यों न ही अपने–अपने आर्दशों और अभिवशत्तियों के अनुरूप देवमण्डल की कल्पनात्मक सर्जना को है। जो सीधे–साधे भोले भाले आदिवासी एवं श्रमिक समुदायों के सदस्य हैं। उन्हें शिवशंकर भोलेनाथ ही भाते हैं। क्योंकि वहीं ता भगवान तथागत बुद्ध और महाबोर के करूणा कलित एवं शान्त एवं सौम्य स्वरूप है। ता शक्ति के उपासक ही शाक्त कहलाते हैं जाकि पूर्वोत्तर के पर्वतीय प्रदेशों में बहुलता के साथ नित्य निवास किया करते हैं। आज तक भी वहाँ पर खाद्यान्नों का अत्यन्त अभाव ही था। अतएव व मांस मछली का भक्षण करने वाले शाक्त लोग ही देवी पूजक हैं। वे उसे ही आद्याशक्ति अथवा दुर्गा या काली तथा कात्यायनी जो भी कहें। बाद में तो पौराणिक साहित्य में वहीं उमा और रमा तथा सोता तक भो आदि परमेश्वर की शक्ति स्वरूपा बनकर पूजने लगी थीं। अवतारवाद बहुदेववाद का हो तो अन्यतम उपाय आखिर है।

हमारे चन्ट चालाक आर्यपुरोहित विप्रां को उल छन्द संयुक्त विष्णु भगवान हो अधिक भाते हैं क्योंकि वहीं तो आखिर दूसरे देवों या दलों के उपासकों को असुर एवं दैत्य बनाकर और बताकर उनका येन केन प्रकारेण अकाल अकांड विनिपात करने में कुशल हैं। शिवशंकर के जितने भी भक्त हैं, पौराणिक साहित्य में वहीं सब क्यों असुर समवाय में गिनाये गये हैं। ये फिर चाहे बलि या विरोचन अथवा पुरोचन या रावण हो या जालन्धर।

जो भी विष्णु–भगवान् का भक्त वहाँ पर नहीं है, वहीं दैत्य (डच) या राक्षस भी बताया गया है। जैसेकि वर्तमान कालीन भारतवर्ष में हो रहा है। जो भी लोग हमारे वर्तमान सत्ताधीशों के आद्योपासक नहीं है. वहीं तो आजकल के असुर हैं या देशद्रोही और धर्म विरोधी भी हैं। फिर जैसे

भगवान होते हैं, उनके उपासकगण भी ठीक वैसे ही होते हैं। यथा कालभैरवाचार्य के अनन्य उपासक भी उन्हीं की भाँति सुरासेवी एवं मांसाहारी हमे देखन को मिलते है।

उसी प्रकार से जिस प्रकार से हमारे वर्तमान सत्ता–पुरुष छल–प्रपञ्च एवं मिथ्या–भाषण में निष्णात है, वैसे ही उनके दिवान्ध उलूक उपासक गण भी हैं। जिन्होंने पाप–पुण्य और नैतिक तथा अनैतिक का सारा ही ज्ञान अन्धी आस्था की भंग की तरंग में अब घोंटकर गटक लिया है। वर्तमान काल के अभिनव नीलकंठ आशुतोष हमारे ये अन्धोपासक ही तो हैं। जिन्हें सत्ता सम्पन्न भ्रष्टाचारी भी शिष्टाचार सम्पन्न ही सुहाते हैं।

भक्तगण केवल अपने आराध्यों के गुण–गणों का ही तो गौरव–गान अर्हनिश अनवरत किया करते हैं। उनके दोष दर्शन का उन्मुक्त अवकाश ही उन्हें कब कहाँ मिलता है। फिर सावन के अन्धों की नाई उनके उस विमल विवेक की वर्तिका भी तो बुझ ही चुकी है, जोकि मानव मात्र को शुभाशुभ अथवा शिव एवं अशिव का भावबोध भी कराती है।

जिन मनुष्यों ने अपना नागरिक होने का गर्वबोध तक भी आजकल खो दिया है, भला वे संविधान द्वारा प्रदान नागरिक अधिकारों को भी क्या समझेंगे। वे तो अब अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तक को भी गंवा बैठे है। उनके लिए आज समानता और स्वतंत्रता तथा न्याय जैसे शब्द केवल शब्दकोषों की ही शाम्भाश्री बस बहा रहे हैं। आखिर भक्तिभावपन होकर व्यक्ति स्वयं को सम्पूर्णतया अपने अनिल आराध्यों के सम्मुख समर्पित तो कर देता है। तब भला उसको अपनों का मौलिक चाह या गृह रह भी कही जाती है। फिर तो बस वह भक्त किसी शायर के शब्दों में यही कह उठता है–

तेरी रजा में ही अब मेरी राजा है,
तू जो भी करे मुझे वह सब बजा है।

ऐसे ही आजकल हमारे देश के निरीह नागरिक भक्तजन बन बैठे हैं। उनका आधुनिक अभिनव विष्णु भगवान का अनन्य अवतार चाह किसी भी विपक्षी को निरपराध रहते हुए भी कारागार में डाले या फिर उसकी सरकारों का भी अनुचित उपायों से भी अकाल पतन करे तथापि हमारे अन्धभक्तों की आस्था–युद्धि में कोई व्यवधान उपस्थित कहाँ होता है। जो भी असुर या दैत्य कहा जाने वाला विरोधी दल या विचार वाला व्यक्ति आकार उनका शरणागत हो जाता है। उसी का अविलम्ब उद्वार ये हमारे आधुनिक नरेन्द्र नामधारी देवेन्द्र कर देते हैं। बल्कि उसे वे स्वर्गिक सुखों का भी संभागी अविलम्ब हो तो बना देते हैं। अपने देवस्वरूप मंत्री मण्डलों में सम्मिलित करके।

हमने इस निबन्ध के आरम्भ में ही कहा था कि अपना देव मूर्ति उपासकों का ही देश है। यहाँ पर पहले पाषाणमय देवमूर्तियाँ बनाई और सजाई जाती हैं, जब तक उनकी आवश्यकता अनुभव की जाती है और जैसे ही उनकी जरूरत चुक जाती है तो हमें मूर्तिभंजक बनने में भी देर क्यों लगती है। आजकल हमारे स्वतंत्रता सेनानियों तक का मूर्तिभंजन किया जा रहा है। एक ओर तो दूसरी ओर क्षमा प्रार्थियों की मूर्तियों को कलित कतार पुरस्कृत करके भी छपाई और सजाई जा रही हैं। उनके लेखे महात्मा गाँधी और पं० नेहरू आज अभिनव असुर ही हैं।

जिन जननायकों को हमारे वर्तमान सत्ताधीश कल तक पानी पी–पीकर गरिमा गाया करते थे, आजकल वे उन्हीं की नई नई मूर्तियों का नूतन निर्माण एवं उनकी षोड़प श्रृंगार भी अब वे कर रहे हैं। उदाहरणार्थ जिन चौ० चरणसिंह को हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों ने अस्सी के दशक में उनके पास सर्वाधिक सांसद होते हुए भी सत्ता के शीर्ष पर सत्तासीन नहीं होने दिया था। उन्हीं के उत्तराधिकारी अब आज उनको भारत–रत्न के अलंकरण से विभूषित कर रहे हैं। जिनको कभी त्रिशंकु सत्य व्रत की भाँति ही उन्होंने स्वर्ग समान सत्ता के श्रृंग शिखर से स्खलित करा दिया था, अब जबकि उनके सम्मुख आम चुनाव की बेला बहुत सन्निकट हैं और देवदल की उनकी एकरस और अखण्ड राजसत्ता के पूर्णतया पराभव का भयभाव भी सता रहा है तब आज उसी कृषक केसरी चौधरी चरण सिंह की महिमा–मण्डन वे क्यों कर रहे हैं?

इसी प्रकार से जब सत्तर के दशक सत्तारूढ होकर समाजवादी जननायक भी बिहार में कर्पूरी ठाकुर ने अपने राज्य के अतिपिछड़े वर्गों को भी शासकीय सेवाओं में आरक्षण सम्बन्धी नियम–विधान पारित कराकर उसे तभी क्रियान्वित भी कराया था। तब हमारे वर्तमान कालीन

द्विज देव–दल ने उनको तो क्या उनकी वयवृद्धा माँ तक को भी क्षमा नहीं किया था। आजकल वे उसी दलित एवं पिछडे वर्ग के उस दिवंगत जननेता को वही सर्वोच्च नागरिक सम्मान देने बैठे हैं, जबकि उनकी अपनी स्थिति 'अटका वनिया देय उधार' वाली ही है। वरना जब वे सत्ताश्रृंग पर थे, तब इन्हीं द्विज देवदलीय पुरुष पुंगवों के पूर्वज पुराधाओं ने अपने दल की समर्थन रूपी वैशाखी हटाकर ही उन्हें सत्ता–श्रृंग से लंगडी मारकर नीचे गिरा दिया था।

इसीलिए हम कहते हैं कि अपना देश मश्तदेवों की ही मूर्तियाँ बनाकर उनकी अनवरत अर्हनिश अबाध आराधना और उपासना भी आस्थापूर्वक किया करता है। जीते–जी वह भले उसे पानी तक को भी नहीं दे यात वही है कि जियत पिता सों दंगम–दंगा, मश्तम भये पहुँचाए गंगा।

अब वे जिन श्रमिक एवं किसानों के कल्याण कर्ताओं का वन्दन और स्तवन कर रहे हैं क्या उनके किसी नीति अथवा सिद्धान्त का भी कार्यपालन हमारे इन सत्ताधीशों ने किया है अब तक केवल कोरा नाम जाप आज ये भले ही उन दलित–पतित एवं वंचित वर्गों के नेताओं को लक्ष्य करें तदपि इनका आचरण तो लगातार उनके विचारों के सर्वथा विरोध में ही दिखाई देता है। पुरस्कार भले ही आज चौ० चरणसिंह और स्वामीनाथन को भी दे दिया। उस सबसे आखिर होना जाना भी क्या है। जब तक आप उनके द्वारा निर्देशित नीतियों और सिद्धान्तों का अनुपालन नहीं करेंगे। 'गुड खाऊं पर गुलगुलों से परहेज' इसी को तो कहते हैं। जैसेकि चौ० साहब यही तो कहा करते थे कि किसानों को उनकी उपजों का उचित मूल्य दिया जाए और उनके लिए विपणन की भी सुचारू व्यवस्था की जाएं। कहाँ हमारी सरकार वर्तमान में मण्डी–व्यवस्था का ही इतिश्री करने को तत्पर है। फिर वह स्वामीनाथन के आयोग द्वारा अनुसित किसानों को लागत एवं मेहनत का लाभांश का 50 प्रतिशत भी उसे कहाँ दे रही है। वह तो उसे बस न्यूनतम समर्थन मूल्य हो दे रही है वह अधिकतम मूल्य कहाँ है। जिसका आश्वासन हमारे देश के वर्तमान वाचाल प्रधानमंत्री ने देकर उनके सुदीर्घ संघर्ष को भी उन्होंने समाप्त कराया था।

पूरे एक डेढ वर्ष पर्यन्त भयंकर शीत और ताप को सहन करके भी वे आबाल वृद्ध एवं तरूण तपस्वी दिल्ली के दुर्गद्वार पर अपनी दस्तक देते रहते थे। उनमें से लगभग सात–आठ सौ किसान उस संघर्ष में शहीद भी तो हो गये थे। परन्तु आपका पाषाण हृदय तब भी द्रवित कहाँ हुआ था। तब तो आपने अपने गुजराती धनकुबेरों के लिए तीन काले कानूनों को कॉल हो उनके वक्षस्थल पर ठोंक दो। जब उ०प्र० के विधानसभा के चुनाव निकट थे, तभी हमारे अभिनव नरेन्द्र ने उनको मिथ्या भाषण देकर उन्हें खाली हाथों ही बैरंग लौटा दिया था। आज जब एक बार फिर आपके साम्राज्य की जब तीसरी पारी आरंभ होने को है। तभी आज आप उनके जननायकों को पूजा–प्रतिष्ठा पुरस्कार का प्रसाद चढ़ाकर क्यों कर रहे हैं।

'युज एण्ड थ्रो' की यह परिपाटी हमारे आर्यदेवों की पुरातन और सनातन भी है। यथा, वाल्मीकि रामायण से लेकर रामचरित मानस तक में बनवासियों एवं आदिवासियों की सैन्यवाहिनी सजाकर श्री रामचन्द्र जी लंकापति रावण पर विजय वैजयन्ती भी अपनी फहराते हैं। परन्तु हमारे आर्य पुरोहितों ने उन्हीं जननायकों को बाद में अपनी पुराण कथा सम्बन्धी पोथियों में केवल रीछ एवं वानर जैसी मानवेतर योनियों के ही तो जीव जन्तु दर्शाया और बताया है। क्या आपने और हमने कभी किसी वन्य–वानर एवं रीछ और भालू को मानव के साथ संवाद करते हुए देखा या पाया है।

आखिर में सभी रामदल के वन्यनर हो तो वानर बताकर नायक से विनायक बनाये गये हैं। वरना रोड या ऋक्ष क्या वे जन या गणनायक नहीं थे। लिच्छिवियों को ही भाषाविकार के आधार पर 'रोड' बताया गया है। तो लिच्छवि गण मंच के आठ गणों में वज्जि और भालू (भिल्ल) तथा जतंगण या जाट भी है। जर्तायु या जटायु जैसे जनवाद्धा की मुर्दा मांस भक्षी गिद्ध बताना कितनी बड़ी मक्कारी है। जबकि एक पुराण में उसको विष्णु भगवान के दिव्य वाहन गरूड का ही मौसेरा भाई भी बताया गया है। गरूड या जरत जो महाराज भी संपाती के ही तो सुपुत्र थे।

वहाँ पर आयु नामक पुराण पुरुष की दो पत्नियाँ वर्णित हैं, कद्रू और विनीता। कद्रू के यदि मध्यपूर्व के कई लोग हैं तो बिनीता के ही पुत्र गरुड़ और जटायु बताए गये हैं। वह मूलतः जत्तांयु शब्द ही है। जार जनगण का जटायु जेसा जननायक भी जनयोद्धा हो किसी अन्यायी परन्तु बलवान शामक के साथ भी सुदीचं संघर्ष कर सकता था। परन्तु उनका उचित उपयोग करके भी उनका विरूपण करना महा मक्कारी ही तो है।

आजकल हमारे प्रथम गृहमंत्री सरदार पटेल का भी जमकर दोहन हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवादी सत्ताधीश कर रहे हैं। परन्तु जिस पिछली सरकार ने उनके नाम से विशाल 'सरदार सरोवर' का निर्माण करके सारे ही सौराष्ट्र के सूखे को समाप्त करके उसे सुजान सुशस्य श्यामल भी बना दिया है। वे लोग तो अब देशद्रोही ही हैं? और सरदार पटेल के विरोधी भी हैं? परन्तु जिस अभिनव अखण्डल ने केवल उसकी विशालतम लौहमय प्रतिमा का ही बस नूतन निर्माण कराया है, वो आजकल परम राष्ट्रभक्त क्यों है। इसीलिए मैं यह कहता हूं कि यह देश मूर्ति पूजकों का ही है। महापुरुषों के आचार–विचारों से उसका कोई सीधा सम्बन्ध कब कहाँ रहा है।

यदि भारत रत्न का यह झुनझुना जो अब जाकर बच्चों की ही भांति किसानों को पकडाया है। यदि सत्य में ही उनका सम्मान करना था तो वह कर्पूरी ठाकुर से ही पहले ही विगत वर्ष ही दिया जाना चाहिए था क्योंकि चौ० चरणसिंह मध्य किसान जातियों के राष्ट्रीय जननेता थे। जबकि कपूरी ठाकुर की पहुँच और पकड़ बिहार से बाहर भी नहीं थी। इसके विपरीत चौ० साहब की प्रभाव परिधि उत्तरप्रदेश से लेकर बिहार एवं हरयाणा और राजस्थान से लेकर उडीसा तक भी थी। कारण उक्त प्रदेशों में उनके राष्ट्रीय लोकदल की सरकारें भी समय–समय पर रही थीं।

वास्तव में तो भारत–रत्न के सर्वप्रथम अधिकारी यदि जाटों के कोई थे चौ० साहब से भी पूर्व तो वे महान त्यागी राजश्री महेन्द्र प्रताप ही थे, उनको तो यह पुरस्कार तभी मिलना चाहिए था, जबकि भारत–सरकार ने अफगानिस्तान में संसद भवन का नूतन निर्माण कराकर स्वयं हमारे मुग्धमना प्रचण्ड प्रचारक प्रधानमंत्री मोदी महोदय ने उसका उद्घाटन भी किया था। वह संसद भवन जोकि राजा–साहब के स्वतंत्रता संघर्ष और महान त्याग का पुण्य स्थायी स्मारक होता वह तो उन्होंने स्वदल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम कर दिया था?

जहाँ पर राजा–साहब ने 1915 ई० में अपनी 'आजाद हिन्द सरकार' खड़ी करके विदेशों में स्वाधीनता का सस्वर शंखनाद भी किया था। परन्तु वैसा करने से संभवतः हमारी वर्तमान की वोट–बटोरू और जुगाडू सरकार को मतदान में लाभांश उपलब्ध नहीं होता, हमें तो उसके द्वारा थोक के भाव से भारत रत्न लुटाने से तो बस ऐसे ही प्रतीत होता है कि उनका अटूट विश्वास 'नौ नकद और तेरह उधार' में ही है। आखिर तो यह गुजराती बनियाओं की ही सरकार हैं। इसी ब्याज से उसने किसान वर्ग के नवोदित नक्षत्र जयन्त चौधरी को भी तो अपने ही देवमण्डल के साथ मिलाकर उसके भावी प्रगतिपथ को भी बजाय सेवानिवृत्तः प्राध्यापक उज्जवल आलोक के अन्ध तिमिर से ही तो आपूर्ण कर दिया है। वह भी ऐसे कुटिल काल में जबकि देशव्यापी कृषक–आन्दोलन दोबारा उभार पर है। ऐसी विषम परिस्थितियों में जबकि उस नवल नक्षत्र का राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावपूर्ण प्रकाश अपने प्रबल प्रेरणा पुंज के बिखेरना था, उस समय स्वार्थ–समीर में वह घने काले बादलों की भाँति कहीं तेजहत ही तो अब होकर रह गया है।

वरना पश्चिमी उत्तर–प्रदेश से लेकर हरयाणा और पंजाब से लेकर आज एक केन्द्रीय कृषक केहरी की अत्यन्त आवश्यकता अनुभव की जा रही है। परन्तु आज के सन्दर्भ में हम जयन्त जी के पाला–परिवर्तन के विषय में केवल इतना ही कहना चाहेंगें कि

"बड़े गौर से सुन रहा था जमाना,
तुम ही सो गये दास्तां कहते–कहते।"

दीनबंधु छोट्राम से लेकर किसान केसरी चौ० चरणसिंह और जननायक चौ० देवीलाल तक की जो एक अविरल और अखण्ड श्रृंखला थी जैसे उसकी ही एक अगली कडी उसमें से टूट गई है। इस विषय में हम महाकवि दिनकर के शब्दों में बस यही कहना चाहेंगे–

"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो रहे तटस्थ समय लिखेगा उनका भी अपराध।"

Revolt (Uprising) of 1857 or The 1st War for Independence

- R.N. Malik

Continue in Previous issue Page No. 16 of Jat Lahar

This costly mistake led to the ultimate defeat of the rebels in Delhi. Instead, they engaged in a kind of daily guerrilla type attacks on the Company army on the ridge which were being repulsed simultaneously. Casualties in the camp at the ridge were high both due to diarrhoea (largely due to consumption of partially treated water of Najafgarh drain) and daily skirmishes with the rebels. In the month of July, 25 officers and 400 sepoys were killed or wounded or died due to cholera. On 5th July, Bernard also died of that dreaded disease. General Reed took the command but he too collapsed for the same reason within a fortnight. The next senior most General Nevillie Chamberlain (coming from Panjab) got wounded on 15th July. Finally, General Archdale Wilson (Commander of Meerut units) took the command and survived till end of the war in Delhi. However, the total count of army had increased from 2300 to 6600 by end of August after receiving reinforcements from Panjab. But the War Council of Wilson wanted more reinforcement from Panjab.

John Lawrence, the Governor of Panjab had put all army units at alert once he got the news of overtaking of Delhi by the mutineers on 10th May. Consequently, the little commotion of mutiny in army units were suppressed quickly at Peshawar, Lahore, Hissar and Jullundur. However rebels in Ludhiana were on rampage for few days but the situation was brought under control within few days. Lawrence sent some troops under Brigadier Niville Chamberlain and Chief Engineer Baird Smith along with his labour Corps which proved extremely helpful in days to come to pave the way for advancement of the army. He also sent a moving column (an army Regiment with light equipment but trained to attack with a lightening speed under adverse circumstances) and other troops numbering 4400 under Brigadier John Nicholson along with heavy transport unit (siege train) carrying all the necessary equipment and other material. Nicholson reached Delhi on 13th August. His domineering and motivating persona, already known to the troops, lifted up the sagging morale of the units at the ridge.

Battle at Najafgarh

First of all, services of Nicholson were utilised to attack and silence the battery at Ludlow Castle (near present International bus stand) that was shelling at the Metcalf House. Nicholson achieved this feat with his Moving Column in the few early hours with a casualty figure of 19 killed and 94 wounded. Very soon, an information was received that rebels had set up a unit of 6000 sepoys at Najafgarh to intercept the transport unit (siege train) coming from Panjab. Nicholson urgently rushed to Nangloi along with his Moving Column to make pre-emptive strike on the rebels who had concentrated in a Serai at Najafgarh. Nicholson ordered his Column to procede to Najafgarh on 25th August in torrential rain and attack the units of rebels and capture the Serai. The troops lost no time in reaching near the Serai and got it's control in just two hours of the start. The damage to the Serai was caused by the fires of the artillery guns. Rebels lost 800 jawans while the Moving Column of Nicholson lost two officers and 23 men besides capturing the guns, stores and other equipment of the rebels. The credit for vicory was given to the soldiers of Panjab consisting mostly of Sikhs. Panjab soldiers forgot the wounds of annexation of Panjab in 1849 because of their old grouse against Muslims due to killing of four Sahibzade of Guru Gobind Singh Ji in 1667. However this victory, second after the Badli-ki-Serai battle on 8th June, further boosted the morale of the army at the ridge and the commanders of the War Council of General Smith felt that their army had a bright chance to recapture Delhi and decided not to lose time to take over the Palace and arrest the King Bahadurshah Zafar at the earliest possible. Nicholson returned back at the Ridge quickly and the War Council started planning for the final attack on Delhi.

Assault on Delhi.

The Muslim rulers had constructed a thick wall round the Red Fort in a semicircle with a radius of one km or so. The wall (or the curtain wall) was a safety belt to render the Palace (Red Fort) impregnable. There were five gates along the periphery of the semi circle namely Delhi Gate, Lahori Gate, Kabul Gate, Kashmiri Gate and Mori Gate. The rebel army had made adequate arrangements to defend the area within the semicircle by deploying guns at all the gates and also taking positions at high points with guns and heavy stones. The information with War Council was the number of rebel force could be 40000 along with 40 pieces of field artillery and plenty of ammunition for them and the114 guns that were mounted on the walls.

On the other side, the siege-train arrived from Panjab on 4th September. The heavy artillery guns were drawn by elephants. Vast number of carts carried sufficient ammunition. But General Smith was still edgy on attacking the rebel army with a limited force of 6000 men as the operation would have to be launched under heavy fire of the enemy from strategic positions. Moreover 2500 men were in hospitals of whom 1100 were Europeans. But view point of the Chief Engineer and pressure of the War Council, commanders, particularly from Nicholson, compelled Wilson to agree for an attack to be launched on 14th September or so.

Storming Delhi:-

Initially, batteries (Artillery guns) were set up under heavy fire from rebels at five strategic locations on 8th Septembe. Battery No.1, consisting of five heavy artillery guns and five medium size artillery guns, were set up between Mori Gate and Hindu Rao House (present location of Hindu Rao hospital). These artillery guns demolished the wall near the gate on the very first day.

No.2 battery was set up between Ludlow Casttle and Kudsia Bagh to attack the Kashmeeri Gate side. This battery started hammering the wall on 11th September.

No.3 battery was set up behind the Custom House building, near present ISBT. A mortar battery was also placed in the Kudsia

Bagh. These batteries were set up under heavy fire from the wall but the soldiers went on dying but continued to set up the batteries uninterrupted.

The invading army was divided into five columns with 1000 troops each. First three columns under Nicholson's command to enter the city through the breaches of the wall between the Yamuna river end upto Kashmeeri Gate. Fourth column under Major Reid was to attack from the Kishanganj side and proceed to Kabul Gate and enter the city from there. The 5th column was kept as reserve at Ludlow Castle. Almost 2000 soldiers were from Panjab. The attack was launched by 3000 men under four columns on 14th September 1857. There was a ditch along the curtain wall and scaling ladders had been arranged in adequate quantities to cross over the ditch. Starting plan was that a small unit will enter the city through the breaches of the curtain wall and blow up the Kashmeeri Gate and then, the troops would enter in large number. The sepoys of that unit crossed the ditch with the help of scaling ladders and entered the city through the breaches of the wall under heavy attack from the curtain wall from firing and throwing of stones. Many sepoys were killed but the unit succeeded in blowing up the Kashmeeri Gate. Thereafter, the troops of three columns entered the city like a swarm of bees. The next part of the plan was to move towards Kabul Gate where troops of 4th column would join and then capture Jama Masjid. After entry through the Kashmiri gate, troops of three columns under the command of Nicholson started moving towards the Kabul Gate through narrow streets under heavy fire from the houses and received heavy casualties in the process. But the 4th column under Major Reid could not advance to the Kabul gate as planned due to delay in the arrival of mortar guns. They were under heavy fire from the attack of a strong army of 14000 rebels at Kisanganj. It appeared that the rebel army will destroy the fourth column and take over the camp at the ridge soon. But the forces from the reserve fitth column armed with light artillery guns saved the fourth column. Reid received the bullet injury in the forehead and sent to the hospital. But the troops of three columns under the command of Nicholson were able to penetrate under heavy fire at Mori Gate and Lahori Gate and reach the Jama Masjid, Begumbagh and the Church building by the night. Nicholson was shot and taken to medical aid camp and died after eight days. The casualties during the day were heavy I.e.66 officers and 1104 sepoys were killed and wounded. The overall Commander of the operation, General Wilson, set up his headquarter in the Church building. With Nicholson mortally wounded and heavy casualties in view, Wilson wanted to withdraw but prevented by Chief Engineer Baird Smith and other commanders.

Strangely, the mutineers, even after giving a very tough fight, started fleeing to the adjoining villages and the troops went on a looting spree, particularly on the deserted shops of traders of European liquor. Some rebel units were still in the houses and skirmishes were still going on. Lot of ammunition was captured and all was clear by 19th evening. King Bahadurshah Zafar and his family had been shifted to the tomb of old king Humayun who ruled India from 1526 to 1556. The Palace was taken over and it became the final headquarter of General Wilson. Next day, the King Bahadurshah Zafar refused to accompany the rebel leader Bakhat Khan and sent an offer of surrender to Major Hudson provided the lives of his wife and son were saved. The offer was accepted and the king was imprisoned in a building in Chandani Chowk. His other two sons made a similar offer but it was rejected. Then, they surrendered unconditionally and arrested by Hudson who shot them near Chandani Chowk. He justified his action by saying that a big crowd was following him to get them released.

Situation at other places:-

The story of rise and fall of the rebellion was almost similar at other theatres of war as it happened in Delhi I.e. rebels gaining ascendancy in the first phase followed by defeat in the final phase against the Company's smaller but determined armies in the battles. As mentioned earlier, it was largely because the Company armies were well organised, commanded by war veterans and having heavy artillery guns. The narrative starts from Agra.

Agra:-

The rebellion in Agra and adjoining towns and villages was quickly induced from the start of the rebellion in Delhi from 11th May 1857. The Regiment at Agra mostly consisted of young recruits and the more experienced sepoys were on leave. The fear of advancing rebel columns gripped the British troops and loyal sepoys with fear. Initial engagement with a rebel column ended in defeat. Therefore, the Lt. Governor John Colvin (a civilian head or Administrator of Agra), on the advice of his juniors, decided to confine 6000 loyalists and British civilians and their families inside the Fort. The rebels did not make any effort to besiege the Fort.

After the capture of Delhi, the next priority of General Wilson was to protect the lives of 6000 Britishers and others confined in Fort at Agra. Accordingly, he sent a column of 750 British and 1900 Native troops under Brigadier Greathead to Agra on 24th September. The column reached Agra on 11th October covering a distance of 160 miles without meeting any rebel resistance in the way. The job of Greathead was to bring out the detained people inside the Fort. They celebrated their evacuation in the evening along with the troops. There was a sudden attack at night and that was quickly repulsed. It was believed that rebels became slack in their bid to capture Agra once they came to know that a well armed column under Brigadier Greathead was on the move.

Kanpur:-

General Wheeler at Kanpur did not believe that his troops would revolt because of his popularity among the troops as a whole. Secondly, he had a good rapport with Nana Sahib besides his own wife being an Indian. He did not plan any fortification of any kind in Kanpur as a precautionary measure. But the sepoys revolted in June and besieged the British officers, loyalist troops, British civilians and the family members. Nana Sahib offered to send them by boats to Allahbad along the river Ganges. The offer was accepted and arrangements were made for their evacuation on 27th June morning. All the captives were taken to the bank under tight security. Then some sepoy or miscreant started firing that led to complete confusion and many more British troops were killed and many wounded. Nana Sahib took the survivors first to his own residence and then to the residence of a clerk. The residence was known as Bibighar. They were also joined by refugees from Fatehpur.There too, rebels had

burnt the residence and office buildings of the Britishers. Their total number consisted of five men, 206 women and the children.

Only the news of besieged troops reached Allahbad on 1st July and not the news of massacre on the bank of Ganges on 27th June. Consequently, it was decided to send a well armed column under General Havelock to Kanpur to recapture Kanpur and protect the lives of the women and children.. General Havelock was a highly competent General with lot of war experience behind him. He made necessary preparations of transport for carrying arms, ammunition, artillery guns and foodstuff and started his journey on 7th July. His problems was the heat of summer and occasional battles in the way. But he overcame all the difficulties and reached the outskirts of Kanpur on 16th near a village Maharajpur. The news of impending assault by Havelock reached Nana Sahib and his troops. The troops massacred all the refugees at Bibighar and dumped their bodies into a well 50 feet deep. Some bodies were disposed in the river Ganges after well was full to the brim. This incident sent shockwaves upto England though Lt. Col. James Smith Neil was doing much worse crimes in Allahbad and surrounding areas. He was killed in the battle in Lucknow later on. The news of Bibighar massacre reached Havelock when he was only 23 miles away from Lucknow on 16th July. The news of this ghastly massacre made him more determined to crush the rebellion.

On the other hand, Nana Sahib too had taken position with 5000 troops and artillery guns. His position on the left flank was weak. The spies conveyed this fact to Havelock. Nana Sahib thought that attack would come from the front and weired troops after walking long distance and heat would not be able to cut much ice in the battle. But this was not to be. Havelock attacked from the weakest flank. The fierce battle continued for the whole day and finally the Company army defeated the army led by Nana Sahib on 19th July. Nana Sahib fled away and his whereabouts were never known.The arrested sepoys were taken to the Bibighar and subjected to all kinds of indignities and finallyexecuted.

3. Lucknow:-

Soon after the events in Meerut, rebellion erupted in the state of Awadh or Oudh, which had been annexed barely a year before. The British Commissioner, Resident at Licknow, Sir Henry Lawrence, had enough time to fortify his position inside the Residency compound. The defenders, including Native loyal sepoys, numbered around 1700 men.The rebels assaults were unsuccessful and consequently, they started a barrage of artillery and musket fires into the compound. Lawrence was one of the casualty. He was succeeded by John Eardley Inglis. The seize or siege continued for 90 days. The defenders were reduced to 850 soldiers and 500 non-combatants.

Havelock crushed the rebellion at Kanpur by 20th July. Some more time was taken to wipe out the skirmishes. He wanted to proceed to Lucknow as quickly as possible after he heard about the killing of Lawrence. But his handicap was that his force had greatly depleted in strength because of the killings in the fierce battle in Kanpur and deaths due dysentery and heat strokes. The distance between Kanpur and Lucknow was infested with more rebels Therefore, Havelock needed reinforcements which took time to arrive.

Consequently, Havelock accompanied by General Outram reached Lucknow late on 25th September with a well armed column after defeating many rebel groups in the way. Though numerically small, this column had a fierce battle at Lucknow and made it's way upto the Residency to extricate the besieged members but could not succeed in breaking the siege and joined the garrison. This attempt was called the "First Relief of Lucknow"

.Another column under the command of Sir Colin Campbell (new Commander-in-Chief arrived in October and was able to break the siege and evacuate all the besieged members on 18th November after fighting a tough battle with the rebels army. After capturing Lucknow the column moved back to Kanpur to defeat another attempt of Tantia Tope and repulsed the attack.. This attempt was called the Second Battle of Kanpur. A force of 4000 men had been kept at Lucknow to defeat anyother attempt by Rebles to recapture Lucknow. Finally, Campbell made the last sortie in March 1858 to supress the movement of rebel groups completely and once and for all.

4. Jhansi -

Jhansi State was a Maratha-ruled princely State in Bundelkhand. When the Raja of Jhansi died without a biological male heir in 1853, it was annexed to the British Raj by the Governor-General Dalhosie under the Doctrine of Lapse. His widow, Rani Laxmi Bai, the Rani of Jhansi, protested against the denial of pedigree right. Consequently, Jhansi became the hub of rebellion in the Central India. A small group of British officials and their families took refuge in Jhansi Fort and the Rani negotiated their evacuation. However they were massacred by the rebel sepoys when they were leaving the Fort. The British thought that Rani had complicity in the massacre which Rani denied vehemently but not believed.

Sir Huge Rose assumed the command of Central India Field Force at Indore on 16th December 1857. He was a very scheming Genral and a war veteran as he had taken part in the Turkish-Egyptian war in 1841 and had held many diplomatic posts too. Obviously, he was the right combination of dash and Intelligence.

Rose divided his force of 4500 men (mostly Indians) into two brigades. After collecting necessary logistics required for long journey of 550kms, Rose started journey from Mau or Mhow on 6th January 1858 and reached near Bhopal on 15th alongwith the seize train (group of bullock carts and other animals to carry fighting equipment and other stuff) There he learnt the news that 170 European women and children and 68 artillery men had taken shelter in a mud Fort in the town of Sagar. So Rose started his journey for Sagar the next day. Rathgarh town was located 30 miles in South-west direction of Sagar. It was now under the control of the rebels.The army had to make a tough fight against the rebels on 24th January.The rebels could not take the fires from heavy artillery guns and fled and joined the force of Raja of Bernpur at Bardoia- a place 15 miles from Rathgarh. Rose had to wage a tough fight against the Raja and then proceded to Sagar on 3rd February.

After fighting 3 more battles in the way, Rose reached Jhansi on 21st March 1858. He saw that the Fort of Jhansi was on a hillock and its walls were 15 to 20 ft thick and could not be breached by artillery fires. So he encircled the city and closed entry/exit points with Cavalry. He set up the guns and positioned his army units and

started firing the city buildings. The firing continued for five days from both sides. Rani's army consisted of 11000 troops. Then, Rose got the information that Tantia Tope was arriving at Jhansi with 22000 troops to assist the Rani and was about to cross river Betwa. Rose decided to obstruct the arrival of Tantia Tope by firing at his men at the time of his crossing the river. So,Rose army attacked Tantia Tope at 1.a.m. There was a very fierce battle between two armies .The Tantia Tope army could not bear intensive firing by artillery. Tantia Tope escaped towards Kalpi putting the forest on fire .

After defeating Tantia Tope, Rose moved his depleted army back to Jhansi and allowed the army to rest for the night. He attacked the city next day and proceeded towards the Palace under the cover of artillery fire. There was intense hand to hand fighting on the way. Ladders were also taken to climb up the walls of the Fort. Finally, the troops entered the Palace and engaged the rebels in hand to hand fight. Rani Jhansi fled away from the Palace to Kalpi at 4am. The Palace was taken over. Rose gave free hand to his soldiers to loot

Continue in Next issue of Jat Lahar

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 28.01.90) 34/5'3". Employed as Class-I Officer in Haryana Government. Package Rs. 29 lakh PA. Preferred Chandigarh/Panchkula based family. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691, 8398836161
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 26/5'5". B. Sc nursing from PGI Chandigarh. Employed as Nursing Officer at PGI Chandigarh. Father retired Inspector from Haryana Police. Avoid Gotras: Chahal, Shokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521, 9306484570
- SM4 Jat Girl (DOB 23.08.94) 29/5'2". MNSS Rai, LLB from Punjab University, LLM from Kurukshetra University. Recently started practice in Mumbai. Father employed in KVIC, GOI at Mumbai. Mother housewife. Younger brother B.Tech (CSE) and employed in MNC, Banglore. Preferred match in Tri-city, NCR Delhi, Mumbai. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 7696046215, 8360153519
- SM4 Jat Girl (DOB 90) CSE from Kurukshetra. Working as Manager in MNC Gurugram. Family settled at Panchkula. Mother Saxana, Kayastha. Cont.: 9464998509, 9465111407
- SM4 Jat Girl (DOB Feb. 92) 32/5'3" M.A. Economics, B.Ed. Working as teacher in private school. Father Inspector retired from Chandigarh Police. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26/5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.
- SM4 Jat Girl (DOB Aug. 93) 30/5'5" Chartered Accountant (CA). in MNC Mohali. Father ASI in Chandigarh Police. Preferred Tricity based educated family. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhankhar. Cont.: 9417301464.
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.95) 28/5'5" B.Sc. nursing from PGI Chandigarh and M.A. from Punjab University. Employed in PGI Chandigarh as Nursing Officer. Avoid Gotras: Kaliraman, Jani, Pawar. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 31/5'5" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed as Contract Engineer in BEL Company for six years. Father retired from HMT. Family settled at Pinjore (Haryana). Preferred match in government/private sector. Gotras: Dhayal, Punia, Phaugat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 31/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9053012480
- SM4 Jat Boy (DOB 07.07.98) 25/5'7" MD. Final year from AIIMS Delhi. Working as JR in AIIMS Delhi. Income Rs. 12 lakh PA. Father building Inspector in UIB Department. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Preferred M.D Doctor/Gazetted Officer. Younger brother MBBS. Avoid Gotras: Dagar, Kadyan. Cont.: 9812645624
- SM4 Jat Boy 25/6 feet. B. Tech. in Computer Science. Working as Software Engineer with salary Rs. 20 lakh PA. Agriculture land 7 acre. Avoid Gotras: Boora, Relha, Narwal. Cont.: 9466588288, 8307784925
- SM4 Jat Boy (DOB 22.05.93) 30/5'11" BCA from Punjab University. MCA from Chandigarh University. Employed

in Fire Department in Municipal Corporation Chandigarh. Family settled at Panchkula. Father Sub-Inspector in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Khatri, Sehrawat, Lakra. Cont.: 9463189771

- *SM4 Jat Boy (DOB 18.08.94) 29/6 feet. B.Tech (Mechanical) from Kurukshetra University. Employed as Station Master in Railway at Ambala. Father retired from Army, now employed in Railway. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Budhwar, Rana. Cont.: 9812331339*
- *SM4 Jat Boy (DOB 01.05.89)34/5'6" B.Tech. (CSE). MBA from Chandigarh University. Working as Advisor in MNC at Gurugram. Father Real Estate Agent. Mother housewife. Preferred well educated/settled match with some achievements in academics. Avoid Gotras: Narwal, Dahiya, Tomar. Cont.: 8708566511, 8685911007*
- *SM4 Jat Boy (DOB 05.09.96)27/5'10" B.Tech. from IIT Delhi. Working as Senior Software Engineer in a MNC at TOKYO, Japan with Rs. More than one crore package. Parents retired as Class-I officer an settled at Chandigarh, Relocation of boy is possible for suitable match. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9876221778*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 29/5'11" B. Tech. in Computer Science. Working as Software Engineer in MNC with Rs. 17 lakh package PA. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.10.89) 34/5'8" B. Tech. (CSE). Employed as clerk in H.B.R.C. Mulapur (Punjab) Tata Cancer Hospital. Income Rs. 4.8 lakh PA. Father in Haryana Government. Avoid Gotras: Antil, Malik, Dahiya. Cont.: 9815878952, 9467667105*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.05.96) 27/5'10" Bachelor of Hotel Management from Chitkara University. Master of Hotel Management (Sydney Australia). Currently working in Front Office Management Sheraton grand Sydney Hyde Park Australia Sydney. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Dahiya, Joon, Bajaar. Cont.: 9779903382*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.04.95) 28/5'10" Bachelor of Arts form Pandit Chiranji Lal Govt. College Karnal. Working as A Class contractor Civil and Electrical 11 KV Contractor Chirag Efficient Power System. Income Rs. 2 lakh PM. Father J. E. in UHBVN. Mother housewife. Avoid Gotras: Dhillon, Sehrawat, Gulia. Cont.: 9416012672, 7015671986*
- *SM4 Dr. Jat Boy (DOB 07.07.98) 25/5'7" M.D. final year from AIIMS Delhi in Radiation Oncology. Working as JR in AIIMS Delhi with salary Rs. 12 lakh PA. Father building Inspector in ULB department. Mother housewife. Preferred M.D. Doctor or of gazetted post. Avoid Gotras: Dagar, Kadian. Cont.: 9812645624*
- *SM4 Dr. Jat Boy (DOB 27.09.95) 28/5'9" MBBS and PG Pediatric. Working as HCMS with Rs. 1.10 Lakh PM. Father S.I. in Haryana Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Phaugat, Gill. Dahiya. Cont.: 9812011590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.04.95) 28/5'7" B.Tech. Electrical. Employed in D.C. office Chandigarh. Father retired from HSVP. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mehlawat, Joon. Cont.: 9877297632*
- *SM4 Jat Boy (DOB 30. 12. 94) 29/5'11" B.A. Pursuing M. A. History. Employed as Clerk in Haryana Consumer Commission Panchkula. Father retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwal, Chahal, Malik, Punia, Nehra. Cont.: 9416603097, 9671113565*
- *SM4 Jat Boy (DOB 16. 08. 95) 28/5'8" B. Tech. in Civil Engineering. Working in Dubai IDBI Bank) with package Rs. 14 lakh PA. Father ASI in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Shokhnda, Malik, Lakra. Cont.: 9417483176, 9914156606*
- *SM4 Jat Boy (DOB 30.06.97) 26/5'5" B.A. JBT. Employed as Office Attendant in Reserve Bank of India, Chandigarh. (Non transferable). Income Rs. 10 lakh P.A. Family settled at Chandigarh. Seven acre land in Haryana. Preferred match in Government Sector. Avoid Gotras: Mor, Duhan, Ahlawat. Cont.: 9992255577*
- *SM4 Jat Boy 30/6'2". Employed as Coach at Rohtak. Won Bronze medal in shot put in recent Para Asian Games China. Avoid Gotras: Hooda, Dagar. Cont.: 8607034318*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 26/6 feet. B. Tech (Computer Science). MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20. 10. 92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747*
- *SM4 Jat boy (DOB 21.08.95) 28'9". B. Tech. Mechanical. Working as SEO Specialist in Mohali with 4 LPA. Father in Government Job at Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009*

LIST OF DONORS

MRS. SAVITRI DESWAL **111000.00**
623, SECTOR 7, PANCHKULA.

SH. SURENDER SHARMA **101100.00**
M/S HIMALAYA ENGG. WORKS, JAMMU.

DR. M. S. MALIK, IPS (RTD.) **51000.00**
222, SECTOR 36-A, CHANDIGARH.

MR. JUSTICE PRITAM PAL (RTD.) **51000.00**
#665, SECTOR 11 CHANDIGARH.

SH. IQBAL SINGH **51000.00**
1105-G, SECTOR 4, PANCHKULA.

MRS. SUNITA DEVI W/O SH. IQBAL SINGH **51000.00**
1105-G, SECTOR 4, PANCHKULA.

SARPANCH GRAM PANCHAYAT **31000.00**
SHAMLO KALAN, DISTT. JIND. (HARYANA)

SH. HARKESH SHEORAN **21000.00**
FLAT NO. 202, GH-17, SECTOR 17, PANCHKULA.

SH. JOGINDER SANGWAN **21000.00**
1019, SECTOR 4, PANCHKULA.

SH. HARDEV SINGH NEHRA **21000.00**
C-11, KENDARYA VIHAR, SECTOR 14, PANCHKULA.

SH. ASHWANI KUMAR **21000.00**
#70, AJIT ENCLAVE, DHAKOLI (PUNJAB).

SH. PARVEEN KUMAR **21000.00**
2516, SECTOR 19, CHANDIGARH.

SH. ROBIN SHEOKAND, AEXN (HVPN) **21000.00**
1788, SECTOR 28, PANCHKULA.

DR. DHARAM PAL **21000.00**
166, HUDA, SECTOR 20, KAITHAL.

DR. SONALI DHILLON **21000.00**
W/O DR. DHARAM PAL SINGH
166, HUDA, SECTOR 20, KAITHAL.

SH. ISHWAR SINGH **21000.00**
#4, ADARSH NAGAR, PANIPAT.

SH. NARESH KUMAR **21000.00**
#4, HIMSIKHA COLONY, PINJORE.

SH. JAGDEEP SINGH **21000.00**
#3114, SHIV COLONY, KARNAL.

SH. MOHIT KUMAR **21000.00**
FLAT NO. 601, GH-107, SECTOR, 20 PANCHKULA.

SH. SAT PAL SINGH, DM (RTD.) HAFED **21000.00**
#1788, SECTOR 28, PANCHKULA.

SH. JASBIR SINGH SANDHU **21000.00**
F-704, VIKRAM VIHAR, SECTOR 27, PANCHKULA.

SH. ISHWAR SINGH DUHAN, IG. ITBP (RTD.) **21000.00**
#1807-P, SECTOR 21, PANCHKULA.

SH. SULTAN SINGH, IFS (RTD.) **21000.00**
714, SECTOR 12, PANCHKULA.

SH. JASWANT SINGH **21000.00**
#341/22, KISHAN PURA, ROHTAK.

DR. SATYAVART DHANKHAR **21000.00**
CHANDRAWALI FARM HOUSE, MEHAR COLONY,
PANCHKULA.

SH. BHARAT PAL, INSPECTOR **11111.00**
HARYANA ROADWAYS PANCHKULA.

SH. SURAJMAL DAHIYA **11000.00**
FLAT NO. 1703, TOWER 11-A, SUNCITY,
SECTOR 20, PANCHKULA.

BRIG. SUBHASH CHANDER RANGI **11000.00**
6374-B, RAJIV VIHAR, MANIMAJRA.

SH. VIRENDER SINGH PUNIA **11000.00**
507, SECTOR 21, PANCHKULA.

GRAM PANCHAYAT RAMKALI **11000.00**
DISTT. JIND (HARYANA)

MRS. BANTO KATARIA **11000.00**
STATE VICE-PRESIDENT, B.J.P.
#352, MDC, SECTOR 4, PANCHKULA.

COL. OM PARKASH DAHIYA (RTD.) **11000.00**
#261, SECTOR 35-A, CHANDIGARH.

SH. D. P. DHANKHAR, DIG, ITBP (RTD.) **11000.00**
#24, TRIBUNE SOCIETY, VILL: RIAPUR KHURD, U.T.

JAT EKTA MANCH, **11000.00**
JAT DHARMSHALA, DEFENCE COLONY,
AMBALA CANTT. (HARYANA)

SH. R. K. MALIK **11000.00**
969, SECTOR 26, PANCHKULA.

CH. BHARAT SINGH MEMORIAL **11000.00**
EDUCATION SOCIETY, NIDANI, DISTT. JIND

SH. RAJ KARAN **10000.00**
101, SECTOR 22, CHANDIGARH.

SH. KARNAIL SINGH, DSP **5000.00**
PUNJAB POLICE (TRAFFIC), PATIALA.

COL. NIRBHAI SINGH (RTD.) **5000.00**
661, SECTOR 21, PANCHKULA.

COL. PALA RAM (RTD.) **3100.00**
VPO: SIMLA, DISTT. KAITHAL (HARYANA).

SH. HAR NARAIN DSP (RTD.) **2500.00**
NEAR SATSANG GHAR, BHIWANI.

SH. OM PARKASH KADYAN **2500.00**
#377, SECTOR 12, PANCHKULA.

SH. B.S. GILL **2100.00**
43, SECTOR 12-A, PANCHKULA.

SH. SATISH MAKROLI **2100.00**
1439, SECTOR 39, CHANDIGARH.

SH. MAHENDER SINGH KALIRAMAN **2100.00**
PRESIDENT, HMT JAT SABHA PINJORE.

SH. LAXMAN SINGH PHAUGAT **2100.00**
195, NAC MANIMAJRA (U.T.)

SH. MANBIR SINGH SANGWAN **2100.00**
400, SECTOR 27, PANCHKULA.

SH. WAZIR SINGH KHARB **2100.00**
1589, SECTOR 25, PANCHKULA.

SH. M. S. SEHRAWAT **2100.00**
183-A, NAC MANIMAJRA (U.T.)

SH. SANDEEP PAL, **2100.00**
SUPERINTENDANT, HR. H.G. CHANDIGARH.

SH. J. S. DHILLON **2000.00**
1330, SECTOR 21, PANCHKULA.

SH. RAMESH DANGI **1500.00**
#125, SECTOR 23, PANCHKULA.

DR. D. R. KAIRON, HCS (RTD.) **1111.00**
JAY VOYAN VIHAR SECTOR 20 PANCHKULA.

SH. KAPUR SINGH KHASA **1100.00**
235, EKTA VIHAR, BALTANA (PUNJAB)

SH. MOHINDER SINGH MALIK 1100.00
#284/31, MALIK COLONY SONEPAT.

SH. M. S. PHAUGAT **1100.00**
217, SAINI VIHAR, BALTANA (PUNJAB).

SH. MANJIT SINGH MALIK **1100.00**
#108, H BLOCK, POLICE LINE MOGINAND, PANCHKULA.

SH. JAGMINDER KHARB **1100.00**
1589, SECTOR 25, PANCHKULA.

SH. MEWA SINGH DHULL **1100.00**
VPO: HARSOLA, DISTT. JIND (HARYANA)

SH. HARI SINGH MAHLAN **1100.00**
#1086, SECTOR 15, PANCHKULA

SH. PREM SINGH **1100.00**
JAT BHAWAN SECTOR 27, CHANDIGARH.

SH. SUMER SINGH **1100.00**
JAT BHAWAN SECTOR 27, CHANDIGARH.

MRS. SAROJ RANI **1100.00**
2128, SECTOR 15, PANCHKULA.

SH. DHARAM PAL CHAHAL **1100.00**
9-A, GH-10, MDC, SECTOR 5 PANCHKULA.

SH. HAWA SINGH NAMBARDAR **1100.00**
VPO: JULANA, DISTT. JIND (HARYANA)

SH. SHAMSHER SINGH AHLAWAT **1100.00**
#1363, SECTOR 26, PANCHKULA.

SH. RAMESH SIWACH **1100.00**
F-502, GH-82, SECTOR 24, PANCHKULA.

SH. ANAND SINGH **1100.00**
#1378, SECTOR 21 PANCHKULA.

SH. MAHAVIR SINGH **1100.00**
#516, SECTOR 12-A PANCHKULA.

SH. RAMPHAL NAIN **1100.00**
#658, SECTOR 21, PANCHKULA.

SH. PRITAM SINGH SHEOKAND **1100.00**
#778, SECTOR 21, PANCHKULA.

SH. NARESH KUMAR **1100.00**
#219, SECTOR 23, PANCHKULA.

SH. JAIBIR SINGH MALIK **1100.00**
VPO: SHAMLO KALAN, DISTT. JIND (HARYANA)

SH. RAJENDAR SINGH KHARB **1100.00**
#3, GOLDEN ENCLAVE, ZIRAKPUR (PUNJAB).

SH. MAHENDAR SINGH NARWAL **1100.00**
#58, SUBHASH NAGAR, PINJORE.

SH. MUKESH KUMAR **1100.00**
#6, SECTOR 23, CHANDIGARH.

SH. SATNARAIN KUNDU **1100.00**
HSIDC, PANCHKULA.

SARPANCH, GRAM PANCHAYAT **1100.00**
VPO: ANUPGARH, DISTT. JIND (HARYANA)

15 फरवरी 2024 को जाट भवन चण्डीगढ़ में आयोजित बंसत पंचमी एवं दीबंधु चौ० छोटूराम की 143वीं जयन्ती समारोह चित्र

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।